सनातन संवर्धिनी

भारत रत्न महामना पं. मदनमोहन मालवीय जी
संस्थापक

त्यागमूर्ति गोस्वामी गणेशदत्त जी
संयोजक

तृतीय वर्ष - द्वितीय अंक

दिसम्बर - 2017

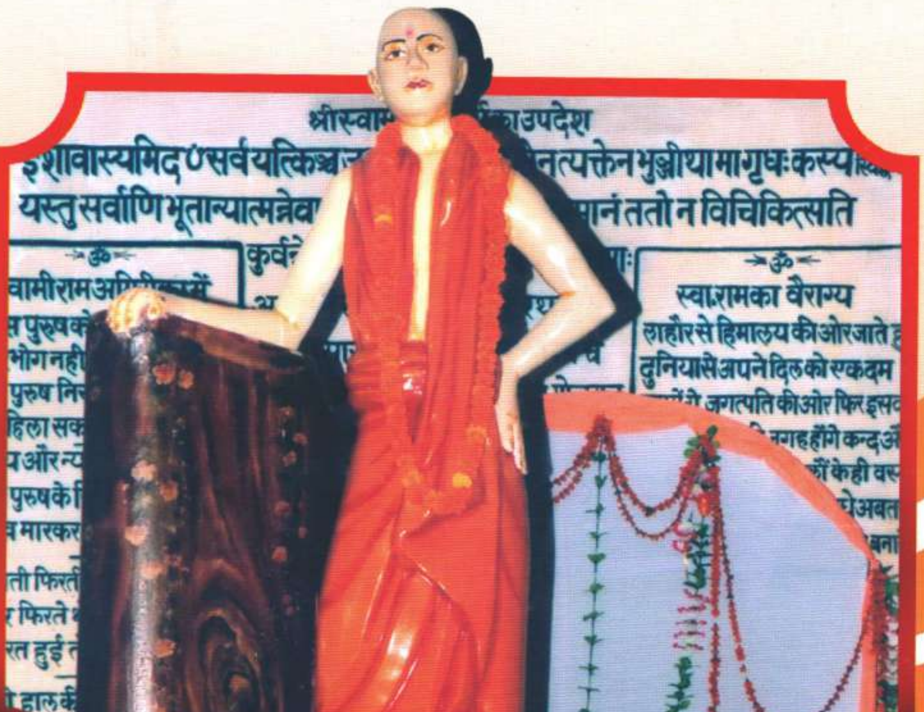

श्रद्धेय स्वामी रामतीर्थ जी महाराज

श्री सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा पंजाब, (पंजी.) नई दिल्ली

(कार्यक्षेत्र: दिल्ली, चण्डीगढ़, पंजाब, हिमाचल प्रदेश, हरियाणा, जम्मू-कश्मीर, उत्तर प्रदेश, उत्तराखण्ड, राजस्थान)
मुख्य कार्यालय: भूपेन्द्र भवन, कृष्णा मार्केट, पहाड़गंज, नई दिल्ली-55, दूरभाष: 011-23586251, 23584016
शाखा कार्यालय: गोस्वामी गणेशदत्त भवन, सैक्टर-19 ए, मध्य मार्ग, चण्डीगढ़, दूरभाष: 0172-2543283
सप्तऋषि आश्रम, हरिद्वार: 01334-261702

E-mail: sdprsabha@gmail.com

संपादक मण्डल

संरक्षक

डॉ. शिवकुमार शर्मा

संपादक मण्डल

डॉ. नन्द किशोर शर्मा

डॉ. भारती बन्धु

डॉ. विजय शर्मा

परामर्श मण्डल

श्री इन्द्र मोहन गोस्वामी

श्री उपेन्द्र शर्मा

श्री सरदारी लाल गोस्वामी

डॉ. देश बन्धु

डॉ. राज पाल विज

संस्कार एवं शिक्षा कार्यक्रम के अधीन 9-10 दिसम्बर, 2017 को बुनियादी सुविधाओं में सर्वश्रेष्ठ - द एस.डी. विद्या स्कूल अम्बाला छावनी की डायरैक्टर एवं प्राचार्या श्रीमती नील इन्द्रजीत कौर सन्धु जी को उत्कृष्टता पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

शिक्षक-दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित समारोह में दि एस.डी. विद्या स्कूल अम्बाला छावनी की डायरैक्टर एवं प्राचार्या श्रीमती नील इन्द्रजीत कौर सन्धु जी को "राष्ट्र निर्माता" पुरस्कार से हरियाणा के शिक्षा मन्त्री श्री राम बिलास शर्मा द्वारा सम्मानित किया गया।

चण्डीगढ़ के सर्वोत्तम विद्यालयों में से श्रीमती मोनिका शर्मा प्रधानाचार्या, पंडित मोहन लाल एस.डी. पब्लिक स्कूल, सैक्टर 32 सी, चण्डीगढ़ को डिजीटल लर्निंग एशिया प्रीमियर मैगजीन द्वारा नई दिल्ली में स्मृति-चिह्न से सम्मानित किया गया।

श्रीमान् अरुनेश चौधरी पी.जी.टी, (शारीरिक शिक्षा) पंडित मोहन लाल एस.डी. पब्लिक स्कूल, सैक्टर 32 सी, चण्डीगढ़ को शिक्षा के क्षेत्र में सराहनीय कार्यों के लिए महामहिम राष्ट्रपति जी ने राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित किया। उन्हें स्कूल प्रबन्धन द्वारा भी ₹ 25000/- की नगद राशि से सम्मानित किया गया।

पुंसवन एवं सीमन्तोन्नयन संस्कार

(संस्कार और संस्कृति शृंखला के अन्तर्गत)

पिछले अंक में संस्कार और संस्कृति शीर्षक के अन्तर्गत संस्कार और संस्कृति के अन्तः सम्बन्ध को स्पष्ट करते हुए सनातन धर्म में प्रचलित प्रमुख सोलह संस्कारों के विषय में विवेचन करते हुए गर्भाधान संस्कार के सम्बन्ध में विस्तार से विवेचन किया गया था। प्रस्तुत अंक में दूसरे और तीसरे संस्कार के विषय में विचारणा प्रस्तुत है।

पुंसवन संस्कार – गर्भ धारण के निश्चय हो जाने पर तीसरे मास में गर्भस्थ शिशु को पुंसवन नामक संस्कार द्वारा संस्कारित करने का शास्त्रीय विधान है। तीसरे मास से गर्भ में आकार और संस्कार दोनों अपना स्वरूप पकड़ने लगते हैं। अतः गर्भस्थ शिशु की रक्षा के साथ–साथ उसके शारीरिक और बौद्धिक विकास के लिए पुंसवन संस्कार किया जाता है। तीसरे मास में ही गर्भ का लिंग–निर्धारण भी होता है। ऐसा धर्मशास्त्र भी मानते हैं और आधुनिक चिकित्सा विज्ञान भी। पुंसवन संस्कार का एकमात्र लक्ष्य पुत्र–प्राप्ति करना है। पुंसवन संस्कार के अनुष्ठान से पुत्र–सन्तति का जन्म होता है। अतः इस संस्कार को लिंग–निर्मिति से ठीक पूर्व तीसरे मास में सम्पादित करना चाहिए। ऐसा अनेक ऋषियों का अभिमत है। पुंसवन शब्द की निरुक्ति से भी इस मत की सहज पुष्टि होती है – **पुमान् प्रसूयते येन तत् पुंसवनमीरितम्** (संस्कार प्रकाश) अर्थात् जिस कर्म या संस्कार से पुत्र–संतति का प्रसव हो उसे पुंसवन कहते हैं। कुछ ऋषियों ने तो इस संस्कार को पुरुष नक्षत्रों – हस्त, मूल, श्रवण, पुनर्वसु, पुष्य, मृगशिरा आदि में और विशेषकर पुष्य नक्षत्र में करने का विधान भी बताया है।

भारतीय संस्कृति और विशेषकर स्थानीय लोक संस्कृतियों में पुत्र–संतति के प्रति अत्यधिक मोह है। पुत्र से वंश–परम्परा चलती है। पुत्र 'पुम्' नामक नरक से रक्षा करता है– **पुम् नाम्नो नरकात् त्रायते इति पुत्रः**। पुत्री जन्मतः ही पराई होती है जबकि पुत्र बुढ़ापे का सहारा होता है आदि अनेक लौकिक और शास्त्रीय तर्क पुत्र–संतति की महत्ता के पक्ष में खड़े दिखाई देते हैं। तभी पुत्र की प्राप्ति के लिए माता–पिता और परिवार–जन सदा लालायित रहते हैं। पर इस प्रसंग में हमारा मानना है कि कन्या–संतति का पक्ष भी किसी भी दृष्टि से दुर्बल नहीं है। जन्म लेते ही वह लक्ष्मी स्वरूपा है। कन्या जन्म पर सामान्यतः लोक में कहावत प्रचलित है – 'लक्ष्मी जी पधारी हैं।' वह साक्षात् ज्ञान की अधिष्ठात्री माँ सरस्वती का रूप है और दुष्टों के दलन के लिए साक्षात् माँ दुर्गा का स्वरूप है। पुत्र यदि पुम् नामक नरक से रक्षा करता है तो पुत्री के कन्या–दान से पिता को असीम, अनन्त और अपरिमित पुण्य की प्राप्ति होती है। तभी तो शास्त्र में एक शीलवती कन्या को दस पुत्रों के समान महत्त्व दिया गया है – **दशपुत्रसमा कन्या यस्य शीलवती सुता।**

पुत्र–पुत्री की महिमा के इस तुलनात्मक विवेचन का एकमात्र उद्देश्य हमारे ऋषियों की समदृष्टि को स्पष्ट करना तथा पुंसवन शब्द की सटीक व्याख्या प्रस्तुत करना है। प्राणी मात्र में समभाव देखने वाली ऋषि–दृष्टि लिंग–भेद के आधार पर पुत्र–पुत्री की भेद–जनक कदापि नहीं हो सकती। संतति तो संतति है। चाहे वह पुत्र हो या पुत्री। संतति परम्परा का नाम है और सृष्टि परम्परा पुत्र–पुत्री के अथवा स्त्री–पुरुष के परस्पर सहयोग से चलती है। पितृ सत्तात्मक परिवार अथवा समाज में वंश परम्परा तभी चलायमान होगी जब वह किसी की पुत्री को धर्मपत्नी बनाकर गृहस्थ धर्म निभाएगा। इसी प्रकार मातृ सत्तात्मक परिवार या समाज में पुत्री को किसी अन्य कुल या वंश या गोत्र के पुत्र से विवाह करना होगा। सारांश यह है कि सृष्टि की निर्माण–प्रक्रिया में पुत्र और पुत्री या स्त्री–पुरुष दोनों समान रूप में अपेक्षणीय है। ऐसी स्थिति में तत्त्वद्रष्टा ऋषि पुंसवन संस्कार के माध्यम से केवल पुरुष संतति की प्राप्ति का उद्घोष करते हुए कन्या–संतति की घोर उपेक्षा कैसे कर सकता है ! यदि ऐसा होता तो प्रत्येक गर्भाधान के बाद किए जाने वाले पुंसवन संस्कार से केवल पुत्र–संतति का जन्म होता है और पुत्री या कन्या या स्त्री के नितान्त अभाव में सृष्टि चक्र पर हजारों वर्ष पूर्व ही विराम लग गया होता। पर संसार में वस्तुस्थिति इसके बिल्कुल विपरीत है।

इस गम्भीर विवेचना का एकमात्र उद्देश्य पुंसवन संस्कार के सम्बन्ध में लोक व्यवहार में प्रचलित इस भ्रांत धारणा को विखण्डित करना है कि पुंसवन संस्कार पुत्र रत्न की प्राप्ति की गारन्टी देता है। इस मन्तव्य को और अधिक पुष्ट करने के लिए 'पुमान्' शब्द की व्याख्या भी अपेक्षित है। क्योंकि पुमान् शब्द के संकुचित अर्थ ने ही समाज में उक्त धारणा को जन्म दिया है। मेरी दृष्टि में पुमान् शब्द केवल पुत्र या पुरुष का पर्याय नहीं बल्कि इससे पुल्लिंग और स्त्रीलिंग दोनों का अर्थ व्यंजित होता है। प्रत्येक भाषा में कुछ ऐसे शब्द हैं जो दोनों लिंगों के लिए समान रूप से प्रयुक्त होते हैं। अंग्रेजी का **Person** और **People** हिन्दी का व्यक्ति

दोनों – स्त्री–पुरुष लिंगों के लिए प्रयुक्त होते हैं। संस्कृत में तो ऐसे शब्दों की भरमार है। 'एकशेष' समास में दो लिंगों में से एक लिंग शेष रह जाता है। पर वह अपने विपरीत लिंग का भी बोध कराता है। इस प्रसंग में 'पितरौ' शब्द का उदाहरण बड़ा सटीक और प्रासंगिक होगा। पितरौ शब्द यद्यपि पितृ (पिता पुल्लिंग) का द्विवचन है। पर इससे पिता के साथ–साथ माता के अर्थ का भी बराबर बोध होता है। महाकवि कालिदास के रघुवंश महाकाव्य के निम्नलिखित मांगलिक श्लोक से यह तथ्य और भी अधिक स्पष्ट हो जाएगा –

वागर्थौ इव संपृक्तौ वागर्थ–प्रतिपत्तये। जगतः पितरौ वन्दे पार्वति–परमेश्वरौ।।

अर्थात् मैं इस जगत के माता–पिता भगवती पार्वती और भगवान शिव को नमन करता हूँ। श्लोक में माता शब्द का कहीं भी प्रयोग नहीं है। यहां पितरौ शब्द से ही माता और पिता दोनों का अर्थ निकल रहा है। तर्क की पुष्टि में एक दूसरा शास्त्रीय उदाहरण भी प्रस्तुत करना अभीष्ट रहेगा। शास्त्रों में तीन प्रकार के ऋणों का उल्लेख है – देव ऋण, ऋषि ऋण और पितृ ऋण। व्यक्ति यजन द्वारा देव ऋण से, अध्ययन द्वारा ऋषि ऋण से और तर्पण, पिण्डदान, श्राद्ध आदि द्वारा पितृ ऋण से मुक्त होता है। यहां पितृ ऋण शब्द पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। संसार में व्यक्ति यदि सबसे अधिक किसी का ऋणी है तो वह माता है जो नौ मास संतान को पेट में धारण करती है। माता के रक्त, माँस, मज्जा, आहार आदि से गर्भस्थ शिशु के शरीर का निर्माण होता है। गर्भस्थ शिशु माँ के उदर में ही मल–मूत्र, स्वेद आदि का उत्सर्ग करता है। यह महद् आश्चर्य है कि शास्त्र में देव, ऋषि और पिता के ऋण का तो उल्लेख है पर जीवन दायिनी ममता की प्रतिमूर्ति त्यागमयी माता के सर्वातिशायी ऋण का कहीं भी वर्णन नहीं है। क्या यह जन्म दात्री जननी के प्रति घोर अन्याय नहीं है ?क्या शास्त्र की दृष्टि लिंग–भेदी एवं पक्षपात पूर्ण नहीं है ?स्थूलतः ऐसा लगता है पर वास्तव में ऐसा नहीं है। 'माता गुरुतरा भूमेः' के उद्घोष द्वारा माता को पृथ्वी से भी अधिक महिमामयी बताने वाला शास्त्र माता की कदापि उपेक्षा नहीं कर सकता। वास्तव में जो तीसरा ऋण – पितृ ऋण है उसमें मातृ ऋण भी समाहित है क्योंकि यहां पितृ शब्द माता और पिता दोनों का बोधक और व्यंजक है। लोक और शास्त्र में प्रचलित 'पितर' शब्द भी दोनों का वाचक है। हमारे पूर्वजों – पितरों की परम्परा में केवल पिता, दादा, परदादा, नाना, परनाना आदि ही नहीं आते बल्कि माँ, दादी, परदादी, नानी, परनानी आदि भी आती हैं।

इस विस्तृत पृष्ठभूमि के आधार पर हमारा मानना है कि अंग्रेजी के **Person**, हिन्दी के व्यक्ति और संस्कृत के पितरौ आदि शब्दों की भाँति पुमान् शब्द भी स्त्री और पुरुष दोनों का बोधक है – पुमान् प्रसूयते येन तत् पुंसवनमीरितम् में पुमान् शब्द का अर्थ केवल पुरुष संतति नहीं बल्कि पुमान् शब्द स्त्रीत्व और पुरुषत्व दोनों का व्यंजक और वाचक है। यदि कन्या–संतति उत्पन्न हो तो वह 'स्त्रीत्व के भाव की सम्पूर्णता' से संयुत हो। वह 'स्त्री नपुंसक' न हो, वह वन्ध्या न हो बल्कि उसमें भूमि की भाँति उर्वरता हो, भविष्य में गर्भधारण की और प्रजनन की क्षमता हो। इसी प्रकार यदि पुत्र–संतति उत्पन्न हो तो वह 'पुरुषत्व भाव की सम्पूर्णता' से संयुक्त हो, वह 'पुरुष नपुंसक' न हो, निवीर्य और निर्बीज न हो अपितु वह अपनी भावी पत्नी में बीज वपन की क्षमता से युक्त हो। अतः स्पष्ट है कि पुमान् शब्द समान भाव से दोनों प्रकार की संतानों की प्रजनन क्षमता का बोधक है। और पुंसवन संस्कार द्वारा जायमान संतति में इस प्रजनन क्षमता (पुरुषत्व एवं स्त्रीत्व) का आधान किया जाता है। एतदर्थ देवों से प्रार्थना, यज्ञ–अनुष्ठान एवं औषधी–सेवन आदि अनेक कार्य पुंसवन संस्कार के अन्तर्गत किए जाते हैं। अब संक्षेप में इस संस्कार की प्रक्रिया पर प्रकाश डालते हैं।

पुंसवन संस्कार के अनुष्ठान का समय गर्भ के तीसरे मास से आठवें मास तक माना गया है। शास्त्र के साथ–साथ कुलाचार या पारिवारिक प्रथाएँ तथा क्षेत्र–भेद समय की इस भिन्नता के कारण हैं। आचार्य बृहस्पति ने काल सम्बंधी भिन्नता को स्पष्ट करते हुए लिखा है – प्रथम गर्भ के समय यह संस्कार तीसरे महीने में सम्पादित होना चाहिए। बाद के गर्भों में चौथे, छठे अथवा आठवें मास में भी यह संस्कार सम्पन्न किया जा सकता है –

तृतीये मासि कर्त्तव्यं गृष्टेरन्यत्र शोभनम्।
गृष्टेश्चतुर्थे मासे तु षष्ठे मासेऽथवाऽष्टमे।।

वास्तव में गर्भस्थ शिशु स्वस्थ, सबल और संस्कारी हो, गर्भ पूरी तरह से सुरक्षित और विकसित हो, किसी भी दृश्य–अदृश्य कारण से गर्भपात न हो, इस निमित्त पुंसवन संस्कार और सीमन्तोन्नयन संस्कार किए जाते हैं। प्रथम गर्भ के समय

अतिरिक्त सावधानी की आवश्यकता होती है। अतः प्रथम गर्भ धारण के बाद तीसरे मास में पुंसवन तथा चौथे–पाँचवे मास में सीमन्तोन्नयन संस्कार करने का विधान है। परवर्ती गर्भों के लिए इन्हें चौथे, छठे, आठवें मासों में भी किया जा सकता है। कुछ ऋषियों का कहना है कि चौथे, छठे, आठवें मासों में इन्द्र विद्युत प्रबल होता है और गर्भपात या गर्भक्षति की अधिक आशंका रहती है। अतः इन्द्र विद्युत की शांति के लिए इन मासों में ये संस्कार किए जाते हैं।

प्रथम गर्भ के समय विशेष सावधानी बरतने की और पुंसवन संस्कार तथा सीमन्तोन्नयन संस्कारों को तीसरे और चौथे मास में करने की क्यों आवश्यकता होती है इस जिज्ञासा का स्पष्ट उत्तर आश्वलायन स्मृति में दिया गया है और कहा गया है कि रूधिर के अशन (खाने के लिए) में तत्पर कुछ अदृश्य दुष्ट राक्षसियाँ पत्नी के प्रथम गर्भ को खाने के लिए आती हैं। ये अदृश्य क्रूर मांस भक्षी प्रथम गर्भ काल में गर्भिणी स्त्री पर अपना अधिकार जमा लेती हैं तथा उसे मर्मान्तक पीड़ा पहुँचाती हैं। पति को चाहिए कि वह इन राक्षसियों के निवारण के लिए "श्री" का आवाहन करे। श्री (महालक्ष्मी) द्वारा रक्षित गर्भिणी को उक्त राक्षसियाँ किसी भी प्रकार की क्षति नहीं पहुँचा सकतीं। श्री की पूजा से भयभीत हो वे दुष्ट आत्माएँ गर्भिणी को मुक्त कर देती हैं। अतः पति को चाहिए कि वह श्री अर्थात् महालक्ष्मी का अनुग्रह प्राप्त करने के लिए पत्नी का सीमन्तोन्नयन संस्कार करे–

पत्न्याः प्रथमजं गर्भमत्तुकामाः सुदुर्भगाः।
आयान्ति काश्चिद्राक्षस्यो रुधिराशनतत्पराः।।
तासां निरसनार्थाय श्रियमावाहयेत् पतिः।
सीमन्तकरणी लक्ष्मीस्तामावहति मन्त्रतः।। आश्वलायनाचार्य, वीरमित्रोदय संस्कार, भाग–1, पृ. 172

वास्तव में पुंसवन और सीमन्तोन्नयन संस्कार गर्भाधान संस्कार के ही पूरक और उपांग संस्कार कहे जा सकते हैं। कुछ प्राचीन आचार्य और आधुनिक ब्रह्मनिष्ठ ऋषिकल्प आचार्य श्री राम ने भी इन तीनों संस्कारों को एक ही प्रधान संस्कार के तीन सोपान कहा है। गर्भाधान संस्कार के फलीभूत हो जाने के उपरान्त गर्भाशय में भ्रूण की अवस्थिति स्पष्ट हो जाने पर भ्रूण अथवा गर्भ के संरक्षण और विकास हेतु ये दो संस्कार किए जाते हैं। इन दोनों संस्कारों का प्रयोजन यह है कि इनके करने से गर्भ निर्विघ्न रहता है और गर्भपात का भय नहीं रहता।

सामान्यतः गर्भधारण के तीन–चार मास बाद भ्रूण के अंग–प्रत्यंग तथा हृदय आदि प्रकट हो जाते हैं। मन तथा बुद्धि में चेतना का उदय होने लगता है। ऐसी अवस्था में शिशु में जो संस्कार डाले जाते हैं उनका शिशु के भावी जीवन पर गहरा प्रभाव पड़ता है। इस समय गर्भ सबसे अधिक प्रशिक्षण–योग्य होता है। उसमें जैसे संस्कारों का बीजारोपण होगा स्थूल जगत में पदार्पण के बाद वह उन्हीं के अनुरूप आचरण एवं व्यवहार करेगा। अतः भ्रूण में मंगलकारी मूल्यों, आदर्शों एवं सिद्धान्तों के आधान के लिए इन दो संस्कारों को सम्पन्न किया जाता है।

इन संस्कारों के सम्पादन में सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण भूमिका माता की होती है। उसका अपना आहार–विहार और चिन्तन–मनन सात्विक होना चाहिए। भ्रूण के आत्मिक, बौद्धिक और शारीरिक विकास में सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण भूमिका माता के चिन्तन और व्यवहार की होती है। इसके बाद पिता और परिजनों की भूमिका होती है। उनका सर्वप्रथम दायित्व यह है कि वे गर्भिणी को सभी प्रकार से खुश रखें। परिवार का वातावरण पूर्णतः स्वच्छ, शांत और आनन्दमय हो। गर्भिणी पर किसी प्रकार का मानसिक दबाव न हो, कार्य का अतिभार न हो। उसकी दिनचर्या उसकी इच्छा के अनुरूप हो। परिजन उसकी इच्छाएँ जानें और उन्हें पूर्ण करने का प्रयास करें। वास्तव में गर्भिणी की इच्छाओं में गर्भस्थ शिशु की इच्छाएँ प्रतिभासित होती हैं। यह मानवता और सृष्टि–विधान की अपेक्षा है कि काम–काजी गर्भिणी माताओं के लिए सरकार और कोरपोरेट जगत या इसी प्रकार की अन्य संस्थाओं द्वारा विशेष सुविधाएँ दी जाएँ। गर्भिणी को तनावरहित, उन्मुक्त और उल्लसित वातावरण प्रदान करना इन संस्थाओं का नैतिक दायित्व है। गर्भ की रक्षा करना और उसे सुसंस्कारी बनाने की जिम्मेदारी केवल माता–पिता की ही नहीं बल्कि पूरे समाज एवं राष्ट्र की है। गर्भ के माध्यम से जो जीव प्रकट हो रहा है वह ईश्वर का प्रतिनिधि है। अतः सभी के लिए गर्भ पूज्य है। इसलिए इन संस्कारों में देवों के पूजन व प्रार्थना तथा होम आदि के साथ गर्भ के पूजन का भी विधान है। गर्भ पूजन के लिए परिवार के सभी सदस्य हाथ में अक्षत–पुष्प आदि लें तथा स्वस्ति वाचन, देव पूजन व विशिष्ट मंत्रों के उच्चारण के बाद वे अक्षत और पुष्प एक प्लेट में गर्भिणी को दें। निम्न मंत्र के उच्चारण के समय गर्भिणी हर्षित मन से उस प्लेट को भलीभाँति अपने पेट से स्पर्श कराए–

ऊँ सुपर्णोऽसि गरुत्माँस्त्रिवृत्ते शिरो, गायत्रं चक्षुर्बृहद्रथन्तरे पक्षौ।
स्तोमऽआत्मा छन्दांसि अंगानि यजूंषि नाम।
साम ते तनूर्वामदेव्यं, यज्ञायज्ञियं पुच्छं धिष्ण्याः शफाः।
सुपर्णोऽसि गरुत्मान् दिवं गच्छ स्वःपत।।

घर के समस्त वरिष्ठ सदस्य गर्भिणी के पेट पर अर्थात् गर्भ पर पुष्प और अक्षतों की वृष्टि करते हुए उसे आशीर्वाद प्रदान करें। लोकाचार के भेद से गर्भिणी की गोद में जल पूर्ण घट रखने का तथा उसे फल, मिठाई आदि देने की भी परम्परा है। इस अवसर पर माता को विशिष्ट प्रकार की औषधियों को भी सुंघाया जाता है और यज्ञ के उपरान्त देवताओं के प्रसाद रूप में गाय के दूध से बनी खीर भी खिलाई जाती है। वट वृक्ष की जटाओं के मुलायम सिरों का छोटा टुकड़ा तथा पीपल के कोमल मुलायम पत्ते लेकर उन्हें शिला पर पीस कर एक घोल तैयार किया जाता है। आचार्य सुश्रुत ने इस घोल में प्रयुक्त होने वाली औषधियों के विशेष गुणों का उल्लेख किया है। ये औषधियाँ भावी शिशु को तन और मन से परिपुष्ट बनाती हैं। औषधी के इस घोल को कटोरी में भर कर माता को सूघने के लिए दिया जाता है। कुछ ऋषियों ने इस घोल की तीन–चार बूंदें गर्भिणी के दायें नासा पुट मे डालने की बात भी कही है। पर कुछ का कहना है कि माता कटोरी में भरी हुई औषधी के घोल को लम्बे साँस लेकर अन्दर खीचते हुए अधिक से अधिक उस घोल की गन्ध को धारण करे और भावना करे कि औषधियों के श्रेष्ठ गुण और संस्कार गर्भस्थ शिशु तक पहुँच रहे हैं। इस अवसर पर कुछ वेद मंत्र भी बोले जाते हैं। यज्ञ आदि सम्पूर्ण कार्यों के सम्पन्न हो जाने पर गर्भिणी प्रसाद के रूप में उस खीर का भक्षण करे जो यज्ञ की आहुतियों से अवशिष्ट है। भावना करे कि यह यज्ञ का प्रसाद दिव्य शक्ति सम्पन्न है और इसके प्रभाव से जायमान सन्तति किसी न किसी दिव्य गुण से सम्पन्न होगी। खीर खाते समय निम्न मंत्र का उच्चारण करे –

ऊँ पयः पृथिव्यां पयऽओषधीषु, पयो दिव्यन्तरिक्षे पयोधाः।
पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम्।।

सीमन्तोन्नयन संस्कार – इस संस्कार के सम्बन्ध में बीच–बीच में पुंसवन संस्कार के अन्तर्गत बहुत कुछ बताया गया है। पर संक्षेप में स्वतन्त्र रूप में इसका उल्लेख करना भी आवश्यक है। यह गर्भ का तीसरा संस्कार है। इस संस्कार में गर्भिणी स्त्री के केशों को ऊपर उठाया जाता है – **सीमन्त उन्नीयते यस्मिन् कर्मणि तत् सीमन्तोन्नयनमिति।** इस संस्कार का उद्देश्य भी गर्भ की शुद्धि व रक्षा है तथा इसे चौथे से आठवें मास तक करने का विधान है। यह संस्कार भी किसी पुरुष नक्षत्र के योग में किया जाता है। इस संस्कार में भी देव पूजन एवं होम आदि का विधान है। साथ ही पत्नी के केशों को संवारने के पश्चात् गूलर आदि की शाखा को धागे में लपेट कर पत्नी के गले में बाँधने का विधान है। पति विभिन्न प्रकार की वनस्पतियों से बने कंघे से हर्षित मन से पत्नी के सीमन्तों अर्थात् केशों को ऊपर की ओर उठाते हुए संवारता है और सहलाता है। साथ में निम्न मंत्र का पाठ करता है –

येनादितेः सीमानं नयति प्रजापतिर्महते सौभगाय।
तेनाहमस्यै सीमानं नयामि प्रजामस्यै जरदष्टिं कृणोभि।।

अर्थात् जिस प्रकार देवमाता अदिति का सीमंतोन्नयन प्रजापति ने किया, उसी प्रकार इस गर्भिणी का सीमंतोन्नयन करके इसकी संतति को जरापर्यंत दीर्घजीवी करता हूँ। इस संस्कार के सम्पन्न होने पर आचार्य एवं कुल की वृद्धाएँ गर्भिणी को आशीर्वाद देती हैं।

निष्कर्षतः कह सकते हैं कि प्रथम तीन संस्कारों के सम्बन्ध में धर्म शास्त्रों में अनेक प्रकार के मत–मतांतर देखने को मिलते हैं। हजारों वर्षों के सनातन धर्म के इतिहास में ऐसा होना स्वाभाविक है क्योंकि हमारे धर्मशास्त्री प्रत्येक युग की आवश्यकता के अनुसार संस्कारों के क्रिया–विधान में कुछ संशोधन, परिवर्तन एवं परिवर्धन करते रहे हैं। यही सनातन धर्म की सनातनता और प्रत्येक युग के लिए प्रसंगिकता है। सभी ऋषियों ने इन संस्कारों के सम्बन्ध में एक बात स्पष्ट कही है कि गर्भ के माध्यम से आने वाला जीव ईश्वर का प्रतिनिधि है। अतः उसे अपने पूर्ण विकास और सुरक्षा के अनुकूल स्थितियां प्रदान करना प्रत्येक युग के व्यक्ति, परिवार और समाज का धर्म है और सनातन धर्म अपने इस दायित्व को सदा से निभाता आ रहा है। अगले अंक में कुछ अन्य संस्कारों पर प्रकाश डाला जाएगा।

– डॉ नन्दकिशोर शर्मा
प्रधान सम्पादक

वर्तमान संदर्भ में सनातन धर्म की प्रासंगिकता

(स्मृति-ग्रन्थों के आलोक में)

श्रुति और स्मृति हिन्दू धर्म के प्रमुख आधार ग्रन्थ हैं। इनमें श्रुति सभी धर्मों का उत्स है। ''वेदोऽखिलो धर्ममूलम्'' इस कथन के द्वारा मनु ने श्रुति को सभी धर्मों का मूल माना है। सभी स्मृतियों ने उसी से अपना नाम ग्रहण किया है। वस्तुतः सभी स्मृतियाँ वेद पर आधारित हैं। अपौरुषेय वेद के द्वारा प्रतिपादित होने के कारण धर्म की अपौरुषेयता अवश्य ही सिद्ध होती है। धर्म देश या काल से यथार्थतः परिच्छिन्न नहीं होता, देश और काल से यथार्थतः अपरिच्छिन्न होना ही धर्म का धर्मत्व है। **वस्तुतः धर्म वह मानवीय मूल्य है जिसके धारण करने अर्थात् अपनाने से मानव पशुत्व से ऊपर उठकर वास्तव में मानवत्व का अधिकारी बनता है।**

ऋग्वेद में धर्म शब्द धार्मिक विधियों अथवा धार्मिक क्रिया-संस्कारों के रूप में प्रयुक्त हुआ है। ऋग्वेद के कुछ मंत्रों में धर्म शब्द का अर्थ निश्चित नियम अथवा आचरण-नियम के अर्थ में प्रयुक्त हुआ है। मीमांसा दर्शन धर्म-जिज्ञासा को ही प्रमुख प्रतिपाद्य मानते हुए वेदानुमोदित प्रेरक तत्त्व को ही धर्म मानता है। वैशेषिक दर्शन में जिसके द्वारा अभ्युदय अर्थात् आनन्द तथा निःश्रेयस् अर्थात् मोक्ष की प्राप्ति हो उसे ही धर्म कहा है। निष्कर्ष रूप में धर्म के स्वरूप पर विचार करते हुए डॉ. चन्द्रकान्त शुक्ल ने लिखा है - ''भारतीय मत से हम पाते हैं कि धर्म का कोई विशेष लक्षण नहीं है अपितु जीवन के लिए जितने भी शुभ कार्य तथा सदाचार पूर्ण कार्य हो सकते हैं, वे धर्म में समाहित हैं।''

महर्षि मनु ने ''धर्मो रक्षति रक्षितः'' कह कर यह बताया है कि सदा धर्म में मन लगाना चाहिए, क्योंकि धर्म की सेवा नहीं करने से अधम गति होती है। यद्यपि धर्म के अन्तर्गत आने वाले विविध विषयों का विवेचन महर्षि मनु ने किया है। किन्तु उनके अनुसार सत्य बोलना सनातन धर्म है और सत्य से ही धर्म बढ़ता है। उन्होंने यह बताया है कि भिन्न-भिन्न युगों के व्यक्तियों के लिए धर्म का स्वरूप भी भिन्न-भिन्न हो जाता है। सत्य युग में तप की प्रधानता होती है, त्रेता में ज्ञान, द्वापर में यज्ञ और कलियुग में दान को ही प्रमुख धर्म माना गया है। मनु ने विस्तार से विविध वर्णों के व्यक्तियों के लिए आपद्-धर्म का भी विवेचन किया है जिसके अनुसार विपत्ति के समय उन्हें धार्मिक कृत्यों में भी छूट मिली रहती है।

याज्ञवल्क्य ने भी धर्म के विषय में विस्तार से विवेचन किया है। उन्होंने पुराण, न्याय, मीमांसा, धर्मशास्त्र, शिक्षा, कल्प, निरुक्त, ज्योतिष, व्याकरण और चारों वेदों को अर्थात् चौदह विद्याओं को धर्म का स्थान या कारण माना है। मनु की तरह ही उन्होंने भी दान, यज्ञ, आचार, इन्द्रिय-निग्रह आदि को धर्म के अंतर्गत माना है।

पराशर मुनि ने भी अलग-अलग युगों के लिए अलग-अलग धर्म का विवेचन किया है जिसमें कलियुग के लिए दान की महत्ता उन्होंने भी स्वीकार की है। उन्होंने यह बतलाया है कि कलियुग में अधर्म ही प्रमुख हो जाएगा और आचार-भ्रष्ट मनुष्यों से धर्म पराङ्मुख हो जाता है। इस तरह मनु, याज्ञवल्क्य तथा पराशर तीनों ने ही विस्तार से धर्म-तत्त्व का प्रतिपादन किया है जो चार पुरुषार्थों में सर्व-प्रथम है और धर्मशास्त्रों के अनुसार सर्वप्रमुख भी है। धैर्य, सहनशीलता, मन, चित्त और अहंकार आदि अन्तः करणों का संयम, चोरी न करना, तन, मन और वचन की पवित्रता, आँख-कान एवं जिह्वा आदि इन्द्रियों का संयम, विचारशीलता, विद्या, सत्य और अक्रोध इन दश गुणों की सम्मिलित संज्ञा ही धर्म है जैसा कि मनुस्मृति में स्पष्टतः उल्लिखित है -

धृतिः क्षमा दमोऽस्तेयं शौचमिन्द्रियनिग्रहः।
धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्म लक्षणम्।। मनुस्मृति, 6.92

यदि कोई धार्मिक बनना चाहे तो उसमें उपर्युक्त दश गुण अनिवार्य रूप से होने चाहिएँ। ये समस्त गुण ऐसे हैं जिनकी मानव को मानवता की कोटि में सम्मिलित होने हेतु भूतकाल में आवश्यकता थी, आज भी है और भविष्य में भी सदैव रहेगी। वस्तुतः मनुष्य कहलाने हेतु विश्व के समस्त धर्मावलम्बियों एवं विभिन्न देशवासियों में इन मानवीय मूल्यों की विद्यमान्नता अपरिहार्य है। इसलिए देश, काल एवं समय की सीमाओं से परे मानव मात्र के लिए अनिवार्य रूप से अपेक्षित इन गुणों की सामूहिक संज्ञा सनातन धर्म है।

अंग्रेजी शब्द 'रिलीजन' के लिए हमने 'धर्म' को पर्याय मान कर बड़ी गलती की। दोनों में महान अन्तर है। 'रिलीजन' का यथार्थ पर्याय 'मजहब' है, न कि धर्म। किसी विशिष्ट व्यक्ति द्वारा सामयिक उपयोगिता की दृष्टि से एक-दूसरे को विशिष्ट समाज के रूप में बाँधने के लिए जो आचार-प्रधान नियम बनाये जाते हैं वे ही 'रिलीजन' (बाँधना) धातु से सम्बद्ध हैं। फलतः 'रिलीजन' एक समाज में विभिन्न मानवों को बाँधने वाली अनुष्ठान-विधियों का द्योतक है, जबकि धर्म उसे नितान्त भिन्न है। धृ (धारण करना) धातु से निष्पन्न 'धर्म' शब्द उन ईश्वर-निर्मित सिद्धान्तों का द्योतक है जो समस्त विश्व को प्रतिष्ठा देने वाले स्थिर तथा धारण करने वाले होते हैं। 'रिलीजन' या मजहब अथवा मत (सम्प्रदाय) देश तथा काल की परिधि से सीमित होता है। उसका उदय किसी विशिष्ट देश तथा काल में, व्यक्ति विशेष के प्रयत्नों का परिणत फल होता है। उधर 'धर्म' होता है ईश्वर-निर्मित, नित्य, सर्वदा-स्थायी, देश काल की सीमा का अतिक्रमण करने वाला। इसलिए धर्म निरपेक्ष तत्त्व है और सम्प्रदाय सापेक्ष है। सम्प्रदाय की स्पष्ट जानकारी के लिए उससे पूर्व विशेषण लगाने की आवश्यकता होती है जैसे – इस्लाम मजहब, ईसाई मजहब, जैन मत या बौद्ध मत, परन्तु धर्म के स्वरूप-ज्ञान के लिए किसी विशेषण या किसी नियामक शब्द की आवश्यकता नहीं होती। धर्म तो धर्म ही है, अखण्ड सत्तात्मक नित्य पदार्थ, उसके काल से अपरिच्छेद्य रूप को सूचित करने के लिए 'सनातन' (सर्वदा स्थायी) विशेषण कभी-कभी जोड़ा जाता है। फलतः धर्म अथवा सनातन धर्म एक ही वस्तु है। **धर्म की नित्य सत्ता के रूप में अवगत होने पर यह प्रश्न ही नहीं उठता कि धर्म जीवित है क्या ? धर्म नित्य है, वह सर्वदा जीवित है; धर्म की मृत्यु ब्रहांड की मृत्यु है। ब्रहांड को अपनी धुरी पर रखने वाला तत्त्व ही तो धर्म है।**

इस प्रकार यह सिद्ध होता है कि किसी विशेष गुण गौरवशाली आचार्य द्वारा देश कालानुसार किसी देश में जो सद्-उपदेश किया जाता है, वह सम्प्रदाय है, जबकि धर्म का द्योतक तत्त्व है – सार्वभौमत्व, सर्वकालिकत्व और अद्वितीयत्व।

आज के सन्दर्भ में धर्म की प्रासंगिकता :-

आज धर्म की वास्तविक परिभाषा एवं धारणा से विमुख होकर हम धर्म को कभी जहर कहते है, तो कभी धर्म को राजनीति से अलग करने की बे-सिर पैर की बातें करते हैं। कल्पना कीजिए कि यदि किसी मानव या राजनीतिज्ञ में धृति, क्षमा आदि धर्म लक्षण न हों तो क्या वह मानव कहलाने का अधिकारी रह पायेगा। क्या राजनीतिज्ञों में विद्या, सत्य, अक्रोध और अस्तेय आदि गुण अपेक्षित नहीं है ? यदि अपेक्षित हैं तो फिर धर्म के सम्बन्ध में पत्र-पत्रिकाओं के सम्पादक अनाप-शनाप क्यों लिखते जा रहे हैं ? राजनेता ऊल-जलूल विधेयक पास करने की क्यों सोच रहे हैं ? कारण स्पष्ट है कि ऐसे सभी लोग धर्म के मूल तत्त्व-निःस्वार्थ प्रेम भाव और सेवाभाव से विरहित हो गये हैं।

जब धर्म की नि:स्वार्थता प्रेममय है तथा समूचा मानव समुदाय विश्व के किसी न किसी धर्म से प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से जुड़ा है एवं धार्मिक स्थलों अर्थात् मन्दिरों, गुरूद्वारों एवं गिरिजाघरों की नित्य मशरूम की भाँति वृद्धि हो रही है, तो भी चारों ओर छल, कपट, चोरी, डकैती, बलात्कार, कदाचार, हिंसा और वैर-विरोध की तूती क्यों बोल रही है ? केवल इसलिए क्योंकि आज मानव में धर्माचरण और नैतिकता (सदाचार) की कमी आ गई है। साक्षरता के व्यापक होने पर भी, पढ़े लिखों की प्रचुरता होने पर भी स्वार्थ और हिंसा का बोलबाला क्यों है ? इसलिए क्योंकि हमारी कथनी और करनी में अन्तर आ गया है। यद्यपि आज सभी पढ़े लिखे जानते हैं कि सत्य बोलना चाहिए। तैत्तिरीय उपनिषद् का ''सत्यं वद, धर्मं चर'' वाक्य विश्व के अधिकांश लोगों को किसी न किसी माध्यम से सुविदित है परन्तु सत्य भाषण कितने लोग अपने दैनिक व्यवहार में कर रहे हैं ? कौन नहीं जानता कि क्षमा महान गुण है तथापि शिष्य अध्यापक के प्रति असहिष्णु, पुत्र पिता के प्रति तथा पत्नी पति के प्रति, चिकित्सक रोगी के प्रति एवं अमीर गरीब के प्रति सतत् असहिष्णु बना हुआ है। यद्यपि इतिहास भी इस बात का साक्षी है कि - ''य: क्रियावान् स पण्डित:'' तथापि हम सब रावणत्व को प्राप्त हो गये हैं। इस प्रकार समूचा विश्व रावण की भाँति व्यर्थ में ही ज्ञान के बोझ को ढो रहा है। आज के पढ़े-लिखे इन्सान में और शब्दकोश में केवल सजीव तथा निर्जीव मात्र का भेद रह गया है। पढ़े-लिखे इन्सान आचरण के अभाव में उन निर्जीव शब्दकोशों के तुल्य हैं जो जानते तो सब कुछ हैं परन्तु कर कुछ नहीं सकते। यह स्थिति अनैतिकता अर्थात् आचारहीनता का ही परिणाम है क्योंकि समाज में रहने के लिए समुचित आचार तथा व्यवहार को ही धर्म के रूप में जाना जा सकता है। इस तरह कोई भी समाज धर्म को अस्वीकार करके नहीं चल सकता और समाज का आधार लिए बिना धर्म भी नहीं हो सकता।

आज विश्व में जो कुछ भी दुराचार और कदाचार हो रहा है उसका एक मात्र कारण है - हमारी आचारहीनता। स्मृति-ग्रंथों में जिस धर्म का विवेचन हम प्राप्त करते हैं, वह वस्तुत: समाज में समुचित रीति से रहने के लिए व्यक्तियों की जीवन-प्रणाली का नाम है। 'धारणात् धर्म:' इस अर्थ में आने वाला भारतीय आर्य या सनातन धर्म कभी भी मानव - मानव के बीच विभेद की बात कर ही नहीं सकता। मानव की आचार-विधि अथवा जीवन पद्धति का उल्लेख करने के कारण स्मृतियों में विवेचित धर्म आज भी अपनी प्रासंगिकता बनाए हुए है। स्मृति ग्रंथों में धर्म के जो चार या दस लक्षण बताये गये हैं वे किसी भी काल, स्थान या व्यक्ति के लिए पूर्णतया अनुकरणीय हैं।

स्मृति ग्रंथों में धर्म के अंतर्गत कुछ ऐसे विषयों का भी विवेचन हुआ है जिनकी प्रासंगिकता विचारणीय हो जाती है, वे हैं - यज्ञ करना, अहिंसा आदि। आज के वैज्ञानिक युग में यज्ञ करने की बातें हास्यास्पद लग सकती हैं, किन्तु यदि हम गम्भीरतापूर्ण विचार करें तो यज्ञ की भी महत्ता सिद्ध हो जाती है। यज्ञों के करने से मानव का तो चित्त शुद्ध होता ही है, साथ ही साथ समस्त प्रकृति भी शुद्ध हो उठती है। आज के वैज्ञानिकों ने यह सिद्ध कर दिया है कि सबसे दुर्लभ और सबसे उपयोगी ओज़ोन वायु की उत्पत्ति में यज्ञ धूम सर्वाधिक प्रभावशाली होता है। यह देखा गया है कि जिस क्षेत्र में यज्ञ आदि अधिक होते हैं उस क्षेत्र में वर्षा का आधिक्य रहता है और उससे वनस्पतियों की उत्पत्ति भी अधिक मात्रा में होती है। इस रूप में यज्ञ करना आज के युग में भी प्रासंगिक है।

स्मृति ग्रंथों में अहिंसा को धर्म के अंतर्गत स्थान दिया गया है। प्रश्न उठता है कि क्या जीवों की हिंसा करनी चाहिए ? अनेक भारतीय ग्रंथों में 'जीवो जीवस्य जीवनम्' कह कर पशु हिंसा की बात कही गई है। हमारे स्मृति-ग्रंथ

भी इसका विरोध नहीं करते हैं, किन्तु स्मृति ग्रंथों में जिस अहिंसा का उल्लेख प्राप्त होता है, वह यह बताता है कि व्यर्थ में ही ऐसे जीवों की हिंसा नहीं करनी चाहिए जो हमारे लिए किसी न किसी रूप में लाभदायक हैं। इस तरह स्मृति ग्रंथों में आया हुआ अहिंसा शब्द भी प्रासंगिक बना हुआ है। आज जिस रूप में हम समाज में एक व्यक्ति को दूसरे व्यक्ति का अथवा एक वर्ग को दूसरे वर्ग के खून का प्यासा देखते हैं, यदि स्मृति-ग्रंथों की अहिंसा का पाठ उन्हें पढ़ाया जाए तो निश्चित रूप से मानव में भ्रातृत्व का स्वाभाविक विकास होगा, जिसकी आज नितान्त कमी है। इसी प्रकार शौच, इन्द्रिय-निग्रह, दान, दया आदि धर्म के तत्त्व तो सार्वकालिक सत्य हैं और उनकी प्रासंगिकता पर किसी प्रकार का प्रश्न नहीं उठ सकता है।

आज धर्म शब्द का जिस रूप में गलत अर्थ लगाया जा रहा है, वह निश्चित रूप से स्मृति ग्रंथों अथवा अन्य भारतीय ग्रंथों में आए हुए धर्म शब्द के अर्थ से नितान्त भिन्न है। उदाहरण के लिए हिन्दू धर्म अलग वस्तु है और हिन्दू सम्प्रदाय अलग वस्तु। जब हम हिन्दू धर्म का उल्लेख करते हैं तो उससे जिस जीवन प्रणाली का बोध होता है वह वैदिक अथवा सनातन जीवन प्रणाली को द्योतित करता है। इस तरह स्मृति-ग्रंथों में आया हुआ धर्म तत्त्व पूर्णतया प्रासंगिक है। आज की परिस्थिति में भी धर्म मानव को पूर्णता की ओर अग्रसर करता है। शारीरिक, मानसिक तथा आध्यात्मिक इस त्रिविध पूर्णता के अभाव में जीवन का वैयक्तिक विकास पूरा नहीं कहा जा सकता। फलतः भारतीय सनातन धर्म अकर्मण्यों का धर्म नहीं है, वह क्रियाशीलों का धर्म है।

आज जिस तरह लोग अर्थार्जन तथा कामोपभोग के लिए प्रवृत्त दिखते हैं उनको संयमित करने के लिए स्मृति-ग्रन्थों में प्रतिपादित धर्म की प्रासंगिकता निर्विवाद है। यदि मनुष्य स्मृति-ग्रंथों में प्रतिपादित धर्म का अनुसरण करे तो निश्चय ही कुटुम्ब में सुख, वैभव तथा शान्ति का आगमन होगा और जो टूटन, बिखराव और तनाव वर्तमान समय में समाज के हर ओर व्याप्त है वह अवश्य घटेगा तथा नैतिक मूल्यों का विघटन रूक जायेगा और एक उच्च समाज के प्रतिष्ठापन की प्रक्रिया आरम्भ होगी। मनुष्य में उच्च मनुष्यत्व को प्रकट करने का लक्ष्य इस धर्म का है। मानव मानव के बीच प्रेम-भाव रहे, यही सच्चा धर्म है।

- डॉ. सी.के. झा
व्याख्याता
एम.पी.एन. कॉलेज, मुलाना (अम्बाला)

महर्षि गौतम और उनका सेवाधर्म

महर्षि गौतम वैदिक काल के प्रमुख ऋषियों में से एक हैं। वे वैवस्वत मन्वन्तर के सप्तऋषियों में से एक अलौकिक चरित्र वाले ऋषि हैं। महर्षि गौतम का चरित्र एवं जीवन अलौकिक, अद्वितीय और सेवा धर्म से परिपूर्ण था। सर्वप्रथम गौतम शब्द के अर्थ को स्पष्ट करना अभीष्ट रहेगा। गौतम शब्द के अनेक अर्थ हैं जैसे (1) ''सबसे तेज चलने वाला''। शरीर की गति की एक सीमा होती है। असीम गति की मानसिकता एवं चिन्तनशीलता के कारण ही उनको गौतम नाम से जाना जाता है। (2) जीवन, समाज और राष्ट्र का अभिवर्धन करने वाले को भी ''गौतम'' कहा जाता है। आत्मा का सर्वश्रेष्ठ रूप गौतम कहा जाता है। ''गोभिःवस्तं तमः यस्य स गौतमः'' अर्थात् ज्ञान रश्मियों द्वारा अज्ञान के अंधकार को जिसने ध्वस्त कर दिया हो वह गौतम कहलाता है। (3) वैदिक शब्दकोष के अनुसार ''गच्छति पारं ज्ञानं यस्य स गौतमः'' अर्थात् जिसके ज्ञान का स्वरूप अपरम्पार हो वह गौतम है। (4) महर्षि गौतम को अक्षपाद गौतम के नाम से भी जाना जाता है। अक्षपाद का लाक्षणिक अर्थ है - प्रत्येक बिन्दु पर सोच-समझ कर कार्य करने वाला। तर्क संगत अर्थ को अक्षपाद कहा

जाता है। महर्षि गौतम ने अनेक धर्म ग्रन्थों की रचना की है जिनमें न्याय सूत्र, गौतम धर्म सूत्र, गौतम स्मृति, गौतमीय तंत्र, पितृ मेध सूत्र, वृद्ध गौतम स्मृति आदि प्रमुख हैं। इन धर्म ग्रन्थों में सेवा भाव को श्रेष्ठ धर्म बताया गया है।

स्वयं महर्षि गौतम का सम्पूर्ण जीवन परोपकारी और सेवा भाव से परिपूर्ण रहा है। उत्तर भारत में पाप विमोचनी गंगा का जो महत्त्व है दक्षिण भारत में गोदावरी का वही महत्त्व है। समाज कल्याण करने के लिए गंगा-अवतरण करने का श्रेय भागीरथ को है, वैसे ही गोदावरी को पृथ्वी पर लाने का श्रेय महर्षि गौतम को है। गौतम ऋषि ने तपस्या करके गोदावरी नदी को धरती पर अवतरित किया, इसीलिए इसे ''गौतमी-गंगा'' कहा जाता है। महर्षि ने कठोर तपस्या करके शिव को प्रसन्न करके लोकोपकारार्थ गंगा मांगी। तब शिव ने गंगा को आदेश देकर कहा कि वैवस्वत मनु के अठाईसवें (28) कलियुग तक स्वयं गंगा गोदावरी के रूप में धरती पर प्रवाहित रहेगी। साथ ही गौतम ने भगवान शिव को वहाँ पर रहने की प्रार्थना की। इस पर भगवान शिव स्वयं गौतमी के तट के पास त्र्यम्बकेश्वर ज्योर्तिलिंग के रूप में प्रतिष्ठित हो गये।

महर्षि गौतम की साधना एवं आश्रम व्यवस्था की प्रशंसा सुनकर एक समय यमराज ने भी उनके आश्रम का निरीक्षण किया। उसकी तपस्या एवं वैदिक यज्ञ-विद्या से प्रसन्न होकर यमराज ने गौतम को वर मांगने हेतु कहा। महर्षि गौतम सहिष्णु एवं उदार ह्दय मानवता प्रेमी थे। गौतम ने वर देने हेतु यम से निवेदन किया कि यदि आप मुझे वर देना चाहते हैं तो ऐसा वर दें, जिससे मानव अपने माता-पिता के ऋण से उऋण हो जाए। यम ने प्रसन्न होकर कहा - 'तथास्तु'। यदि कोई भी मानव शुद्ध आहार-विहार से युक्त जीवन जिएगा और गोदावरी में स्नान कर त्र्यम्बकेश्वर महादेव के दर्शन करेगा वह पितृऋण से मुक्त हो जाएगा और स्वयं भी मोक्ष का अधिकारी होगा।

महर्षि गौतम दक्षिण में ब्रह्मगिरी में रहते थे। उस स्थान पर एक बार घोर अकाल पड़ा। पशु, पक्षी एवं अनेक प्राणी जल की कमी के कारण मरने लगे। चारों दिशाओं से ऋषि, मुनि व तपस्वी इनके आश्रम में अकाल की भीषण विभीषिका से बचने के लिए आश्रय हेतु आने लगे। गौतम ने वरूणदेव को प्रसन्न किया एवं विचित्र प्रयोग विधि (गायत्री जप) से अन्न व जल उत्पन्न किया। जब तक अकाल की स्थिति रही तब तक सभी प्राणियों का भरण-पोषण कर उनकी सेवा की। इस पर कुछ ब्राह्मणों ने उनकी प्रसिद्धि से जलकर उन पर गौहत्या का अभियोग भी लगाया जो निराधार प्रमाणित हुआ। इस पर भी गौतम ने उनको क्षमा कर दिया। महर्षि गौतम ने लोगों को पशु जीवन त्यागने एवं कृषि कर्म करने का सन्देश दिया। विधिवत कृषि कर्म के प्रवर्तक महर्षि गौतम ही हैं।

एक समय लक्ष्मी ने विश्वकर्मा से एक नगर की स्थापना करवाई। उस नगर का नाम लक्ष्मी के नाम पर 'श्री' रखा। लक्ष्मी ने भगवान विष्णु से कहा कि सभी स्थानों पर अपने दूतों को भेज कर ऋषि, मुनि और ब्राह्मणों को आमंत्रित करो। विष्णु के दूत ब्राह्मणों को बुलाने के लिए नाना देश गये। अनेक स्थानों से 50,000 (पचास हजार) ब्राह्मण, ऋषि, मुनि आये। लक्ष्मी ने नगर के सभी घरों में आवश्यक सामग्री रखकर उस नगर का दान महर्षि गौतम को दिया। महर्षि गौतम ने उस नगर के घरों को अनेक स्थानों से आये हुए ब्राह्मणों को दे दिया।

गौतम धर्म सूत्राणि ग्रन्थ में दया, परोपकार, क्षमा आदि उत्तम गुणों की चर्चा की गई है। गौतम धर्म सूत्र में आत्मा के आठ गुण बताये हैं - दया, क्षमाशीलता, दूसरों की समृद्धि से न जलना, जिस कार्य के करने से हानि हो वह नहीं करना, मंगल का आचरण करना, दीनता न दिखाना, लालच नहीं करना, समर्थ होने पर दुर्बल की सेवा करना। परोपकार के साथ दु:खियों और रोगियों की सेवा करना। प्रत्येक ऋषि-महर्षि ने गौ सेवा को प्राथमिकता दी है। महर्षि गौतम ने भी वृद्ध गौतम स्मृति में गौ सेवा की महिमा की चर्चा की है। गौ की सेवा करना माता-पिता की सेवा के बराबर है।

- सुरेन्द्र कुमार जोशी

सेवा-निवृत्त आर.ई.एस.

IMPORTANT TIPS

1. Strengthen your will power, so that you will not be controlled by circumstances, but will control them.
2. Your mind is great friend if you control it, it is your great enemy if mind controls you.
3. When you are unwilling to perform a task you are tired from the beginning and when you are willing you are full of energy.
4. When you are told you are good, you should not relax but should try to become even better.
5. Listen to your 'Elder's Advice', not because they are always RIGHT, but because they have more experiences of being 'WRONG'.
6. CHANGE is the nature of life, but CHALLENGE is the aim of life, so we have to challenge the changes, not changing the challenges.
7. Comparison is the best way to judge your progress. But don't compare yourself with others. Just compare your yesterday with your today.
8. Difficulties do not come to destroy you, but to help you to realize your hidden powers.
9. Beware of Ego, It is a sword with two edges, the OUTER edge cuts your POPULARITY, while the INNER edge cuts your purity.
10. Be like a candle, which burns itself but gives light to others.

- Dr. R.P. Vij (Administrator)
Saptrishi Ashram, Haridwar

सप्तऋषि आश्रम, हरिद्वार में 2016-2017 में किये गये कार्यों की प्रगति रिपोर्ट

1. आश्रम के सभी मन्दिरों में पेन्ट करा दिया गया है।
2. प्रतिनिधि सभा के निर्णय के अनुसार स्वामी रामतीर्थ हाल में स्टेज के बीच में लगी स्वामी रामतीर्थ जी की बड़ी मूर्ति को पीछे दीवार के साथ शिफ्ट कर दिया गया तथा सम्पूर्ण हाल में दीवारों पर बनी मूर्तियों में पेन्ट कराया गया तथा हाल में अन्दर व बाहर रंग-रोगन भी करा दिया गया। मंच को और बड़ा कर दिया गया है ताकि वहाँ होने वाले प्रोग्राम अधिक भव्य तरीके से हो सकें।
3. आश्रम में पहले तीन कमरों में ही ए.सी. लगे हुए थे। अब सात कमरों में और भी ए.सी. लगाये गये हैं। अब आश्रम में कुल दस कमरे ए.सी. हो गये हैं। अगले वर्ष में कुछ और कमरों में भी ए. सी. लगाये जाने की योजना है।
4. गोस्वामी गणेश दत्त चित्रशाला से गणेश मन्दिर तक सी. सी. रोड़ बनाया गया।
5. यज्ञशाला से सत्संग हाल होते हुये कुटिया नम्बर 7 तक सी. सी. रोड़ बनाया गया।
6. कुटिया नम्बर एक से कुटिया नम्बर 7 तक (कैलाश पर्वत तक) भी सी. सी. रोड़ बनाया गया।
7. कुटिया नम्बर 11, 12, 13, 14 तक होते हुये संस्कृत महाविद्यालय तक सी. सी. रोड़ बनाया गया।

8. कुटिया नम्बर 21 अतिथि निवास से कुटिया नम्बर 22 (गर्ग कुटिया) तक सी. सी. रोड़ बनाया गया।

9. कुटिया नम्बर 23 से 30 तक तथा कुटिया नम्बर 31 से 36 तक की सड़कों को भी सी. सी. रोड़ बनाये जाने की योजना है जिसके लिए मुख्य कार्यालय को अनुमानित खर्चे का पत्र लिखा हुआ है।

10. कुटिया नम्बर 15, 16, 18 का जीर्णोद्वार कराया गया।

11. भोजनालय के सामने जो टीन शैड है उसको बड़ा करने व उसके साथ नयी मिनी किचन बनाने का कार्य चल रहा है। आशा है कि ये कार्य भी शीघ्र ही पूरा हो जायेगा।

12. गोस्वामी गणेशदत्त घाट पर तीन कमरों में अटैच बाथरुम बनाये गये हैं। घाट पर यथा संभव सुधार करने का प्रयास किया जा रहा है। क्योंकि वहाँ पर ब्रह्मलीन त्यागमूर्ति गोस्वामी गणेश दत्त जी महाराज की समाधि, पाण्डवों का स्वर्गारोहण, सनत कुमार, गान्धारी, धृतराष्ट्र की मूर्तियों सहित समाधि-परिसर की चार दीवारी तथा मन्दिरों पर पेन्ट होना अति आवश्यक है। सभा के सहयोग से ये शुभ कार्य सम्पन्न करने का प्रयास किया जा सकेगा। अच्छे शौचालय बनाये जाने की योजना है तथा समाधि-परिसर में कार पार्किंग की सुविधा हेतु सड़क बनाने की भी योजना है।

13. गौशाला में लगभग 100 मीटर बाउण्ड्रीवाल को ऊँचा कराया गया।

14. गौशाला में भूस्सा शैड व कुट्टी मशीन टीन शैड को बनाया गया।

15. बाहर गायों के स्थान को सीमेन्टिड कराया गया ताकि गायें स्वच्छ स्थान पर रहें।

16. गौशाला में 8 नये स्टाफ क्वाटर भी बनाये गये हैं।

17. सप्तऋषि आश्रम की गौशाला हरिद्वार-ऋषिकेश क्षेत्र में प्राचीनतम गौशालाओं में से एक है जो श्री सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा (पंजाब) द्वारा सन् 1936 से हरिद्वार में संचालित है। गौशाला में योगदान देने हेतु सभा ने आजीवन सदस्य / वार्षिक सदस्य भी बनाये हैं। और भी जो सदस्य बनना चाहते हैं उनका स्वागत है।

डॉ. आर.पी. विज	**डॉ. विनोद कुमार सैनी**	**सत्य प्रकाश सक्सेना**
प्रशासक	प्रबन्धक	सहायक प्रबन्धक

श्री सनातन धर्म महावीर दल पंजाब - सेवा शिविर कपालमोचन 2017

हर वर्ष की भाँति इस वर्ष भी कार्तिक पूर्णिमा के शुभअवसर पर श्रीकपालमोचन जिला - यमुनानगर में धूमधाम स सनातन धर्म महावीर दल द्वारा सेवा शिविर लगाया गया। कुछ समय से यह मेला शिविर जिला - यमुनानगर लगाता था, परन्तु इस वर्ष एक माह पूर्व केन्द्रीय कार्यालय को सूचित किया गया कि इस बार यह सेवा शिविर जिला - यमुनानगर नहीं लगायेगा। इस सेवा शिविर को केन्द्र स्वयं लगायेगा। महावीर दल के प्रधान महन्त स्वरूप बिहारी शरण ने अपने अन्य पदाधिकारियों से विचार विमर्श कर यह सेवा शिविर केन्द्र की ओर से लगाने का निर्णय लिया क्योंकि समय कम होने के कारण सामान्य बैठक नहीं बुलाई जा सकती थी। पं. आर. के. कौशिक जी जिला - प्रधान, यमुनानगर को सेवा शिविर का संयोजक बनाया गया तथा फील्ड इंचार्ज आडिसनल दलपति सतेन्द्र सिंह को बनाया गया। केन्द्र की ओर से मेला तीर्थराम तथा मेला कपालमोचन के लिए सभी यूनिटों को एक संयुक्त पत्र जारी किया गया जिसमें सेवा शिविर की पूरी जानकारी दी गयी।

इस सेवा शिविर को सफल बनाने के लिए आर्थिक रूप से महावीरदल जगाधरी वर्कशाप, जगाधरी मैन, महावीर दल बूढ़िया, महावीर दल तिब्बड़ जिला - गुरदासपुर, डॉ. देशबन्धु जी अर्थ एवं कार्यालय मंत्री, श्री मोहनलाल अग्रवाल

अम्बाला शहर, श्री त्रिभुकान्त गोस्वामी दिल्ली, जिला - पटियाला, जिला - संगरूर आदि ने विशेष आर्थिक योगदान दिया। कैम्प को सफल बनाने के लिए श्री तरसेम सिंह तलवाड़, एडिसनल दलपति, तरसेम रिखी, मलेरकोटला, श्री रामस्वरूप तोंगाली, श्री रतनचन्द शर्मा, भगवानदास तिब्बड़, श्री ताराचन्द जगाधरी, श्री जगवीर पहलवान, श्री बन्ताराम आदि ने दिन-रात सेवा करके पूर्ण सहयोग दिया। जिला - यमुनानगर ने पं. आर. के. कौशिक, संयोजक की अध्यक्षता में कैम्प लगाने तथा कैम्प की व्यवस्था के साथ-साथ राशन का भी विशेष योगदान दिया।

यह कैम्प श्री सनातन धर्म महावीरदल के साथ-साथ श्री सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा पंजाब के बैनर तले लगाया गया। मंच के टेबल पर श्री सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा पंजाब का ही बैनर लगाया गया था। कैम्प में 70 स्वयंसेवकों ने पंजाब से अलग-अलग जिलों से भाग लिया। खुशी का विषय था कि ध्वजारोहण के मौके पर सनातन धर्म भारतीय महावीरदल के स्वयं सेवक तथा पदाधिकारी मौजूद थे। इस मौके पर श्री सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान डॉ. शिव कुमार शर्मा जी द्वारा स्वयं सेवकों को भेजा गया सन्देश पढ़कर सुनाया गया। स्वयं सेवकों ने गौबच्छाघाट तथा ऋणमोचन घाट पर चौबीसों घंटे सेवा की। यात्रियों को भी लंगर वितरित किया गया। सभी स्वयंसेवकों को पारितोषिक देकर सम्मानित किया गया। मैं श्री सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान तथा अन्य पदाधिकारियों का आभारी हूँ जिन्होंने प्रत्यक्ष - अप्रत्यक्ष रूप से इस कैम्प को सफल बनाने में अपना योगदान दिया।

महन्त स्वरूप बिहारी शरण
प्रधान, श्री सनातन धर्म महावीर दल

श्री जगद्देव सिंह संस्कृत महाविद्यालय सप्तऋषि आश्रम, हरिद्वार

(प्रगति-रिपोर्ट)

इस वर्ष श्री जगद्देव सिंह संस्कृत महाविद्यालय सप्तऋषि आश्रम, हरिद्वार में दिनांक 8-9 सितम्बर, 2017 को उत्तराखंड संस्कृत अकादमी के तत्त्वावधान में (1) संस्कृत नाटकम् (2) संस्कृत समूहगानम् (3) संस्कृत समूहनृत्यम् (4) संस्कृत वाद-विवाद (5) संस्कृत आशु-भाषणम् (6) संस्कृत-श्लोकोच्चारणम् आदि जनपद स्तरीय अनेक संस्कृत प्रतियोगितायें आयोजित की गई। इन प्रतियोगिताओं में जनपद हरिद्वार के 57 इन्टर कॉलेज एवं पांच महाविद्यालयों के छात्रों ने प्रतिभाग लिया। इस अवसर पर कैबिनेट मंत्री माननीय मदन कौशिक जी, ज़िला शिक्षा अधिकारी महोदय, अनिल मिश्रा पार्षद, महामण्डलेश्वर स्वामी देवानन्द सरस्वती जी एवं डॉ. आर.पी. विज महोदय उपस्थित थे।

दिनांक 9-9-2017 को समापन समारोह में आचार्य बुद्धिवल्लभ शास्त्री, डॉ. ओम प्रकाश भट्ट जी, श्री प्रताप सिंह महोदय तथा गिरधर सिंह भाकुनी महोदय सचिव उत्तराखण्ड संस्कृत अकादमी, हरिद्वार तथा डॉ. रुपेन्द्र दत्त शर्मा (मुख्य शिक्षा अधिकारी) उपस्थित थे। इस अवसर पर विजेता छात्रों को पुरस्कृत किया गया। संस्कृत समूहगान में हमारे विद्यालय ने जनपद प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त किया।

दिनांक 16-11-2017 को हमारे महाविद्यालय में उत्तराखण्ड संस्कृत अकादमी द्वारा आयोजित पौरोहित्य (कर्मकाण्ड) का मासिक प्रशिक्षण शिविर का उद्घाटन डॉ. श्री आर.पी. विज कार्यक्रम अध्यक्ष एवं मुख्यातिथि श्री भावेश भाई जी के करकमलों द्वारा किया गया। दीप प्रज्वलन कर कार्यक्रम का विधिवत् श्री गणेश किया गया। सम्पूर्ण उत्तराखण्ड में ऐसे पाँच पौरोहित्य प्रशिक्षण शिविर लगाए गए हैं। हमारे महाविद्यालय में लगाए गए प्रशिक्षण शिविर में कुल पचास छात्रों को कर्म काण्ड के आधारभूत सिद्धान्तों, मंत्रों एवं वेदी आदि की निर्माण-प्रक्रिया का प्रशिक्षण दिया गया। इस शिविर पर

होने वाले खर्चे का वहन उत्तराखण्ड संस्कृत अकादमी द्वारा किया गया। इस शिविर में हमारे विद्यालय के चालीस तथा बाहरी संस्कृत विद्यालयों के 10 छात्रों ने भाग लिया। इस पुनीत अवसर पर कर्मकाण्ड के उद्भट्ट विद्वान गण आचार्य श्री कान्ता प्रसाद बड़ोला, डॉ. ओम प्रकाश भट्ट, श्री दिवाकर प्रसाद बड़ोला, आचार्य श्री बेणीप्रसाद कपरूवान, श्री श्याम लाल गौड़ एवं प्रशिक्षक आचार्य श्री गोपाल दत्त वेलवाल आदि उपस्थित थे। इस अवसर पर आचार्य श्री वेणीप्रसाद कपरूवान जी ने छात्रों को सम्बोधित करते हुए कहा – कि कर्मकाण्ड का क्षेत्र बहुत विस्तृत है और आजकल समाज में इस विषय का सही सन्देश नहीं पहुँच पा रहा है, इसका सबसे बड़ा कारण इस क्षेत्र में प्रविष्ट अप्रशिक्षितों के कारण लोगों में बहुत प्रकार का भ्रम दिखाई पड़ रहा है, जिससे लोगों में कर्मकाण्ड व पूजा पाठ के प्रति एक नैराश्य की भावना दिखाई पड़ती है। इस विषय में दूसरे क्रम में अपने वक्तव्य में आचार्य श्री कान्ता प्रसाद बड़ोला पूर्व प्राचार्य जी ने छात्रों से कहा - आज कर्मकाण्ड में एक रूपता की आवश्यकता है, इसीलिए इसके लिए समय-समय पर इस प्रकार के प्रशिक्षण शिविरों के आयोजन की परम आवश्यकता है।

आचार्य श्याम लाल गौड़ जी ने इस शिविर की प्रस्तावना प्रस्तुत करते हुए संयोजक महोदय डॉ. राजेन्द्र कुमार गौनियाल प्राचार्य जी को इस पुनीत प्रयास के लिए सर्वप्रथम बधाई दी और कर्मकाण्ड के महत्त्व को प्रतिपादित किया। कार्यक्रम के अन्त में कार्यक्रम अध्यक्ष डॉ. आर.पी.विज जी ने छात्रों को आशीर्वाद दिया तथा अन्त में कार्यक्रम संयोजक महाविद्यालय के प्राचार्य डा. राजेन्द्र कुमार गौनियाल जी ने सबका धन्यवाद किया। कार्यक्रम का मंच संचालन डॉ. श्याम लाल गौड़ जी ने किया। इस अवसर पर महाविद्यालय के आचार्य गण डॉ. कमलेश काण्डपाल, श्री विवेक कुमार, श्री दिगम्बर प्रसाद बड़ोला, श्री रावेन्द्र कुमार, श्री गोपाल दत्त उनियाल आदि उपस्थित रहे।

संस्कृत महाविद्यालय के विद्यार्थियों को कम्पयूटर का प्रशिक्षण देने के लिये कम्पयूटर प्रयोगशाला का निर्माण किया गया। सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा के माननीय श्री बसन्त कुमार गोस्वामी जी के प्रयासों से दानवीर श्री मदन मुरारका जी मुंबई वालों ने छात्रों के शिक्षण हेतु 10 कम्पयुटर विद्यालय को प्रदान किये हैं। विद्यालय परिवार इनका हार्दिक धन्यवाद करता है।

अम्बाला छावनी निवासी श्री राकेश कुमार शर्मा जी ने संस्कृत कॉलेज के छात्रावास में रहने वाले विद्यार्थियों के भोजन के लिए 50 क्विंटल गेहूँ, 10 क्विंटल सब्जी एवं दाल तथा 15 क्विंटल चावल आदि भोज्य-सामग्री दान दी है। विद्यालय-परिवार इस प्रभूत सामग्री के दान के लिए उनके प्रति हार्दिक कृतज्ञता व्यक्त करता है और भविष्य में इस प्रकार के सहयोग की अपेक्षा रखता है।

सुश्री लक्ष्मी सिंह जी का भी साभार धन्यवाद जिन्होंने हमारे विद्यालय के तीन छात्रों को छात्रवृत्ति 7560/- रूपये प्रति छात्र प्रदान कर विद्यालय परिवार को आर्थिक सहायता प्रदान की। विद्यालय परिवार की ओर से हम परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि इनमें सदा सर्वदा यह दान-वृत्ति बनी रहे।

सुश्री लक्ष्मी सिंह के प्रयासों से श्री एन.के.साहनी गाजियाबाद वालों ने 11,000/- रूपये, संजीव गैरा जी ने 6,100/-, श्रीमती पुनीता सक्सैना जी ने 6,000/- रूपये, श्री तरूण गेरा सुपुत्र श्रीमती कांता गेरा जी ने 6,000/- रूपये, श्री अक्षय गेरा जी ने 6,000/- रूपये गरीब छात्रों की सहायतार्थ विद्यालय को दान दिये।

विद्यालय परिवार इन सभी दानी महानुभावों का हार्दिक आभार प्रगट करता है तथा भविष्य में इन सभी से उदार सहयोग की आशा रखता है।

– राजेन्द्र कुमार गौनियाल
प्राचार्य

ए+ ग्रेड की गौरवपूर्ण उपलब्धि का नया कीर्तिमान

सनातन परिवार के लिए अत्यन्त हर्ष और गर्व का विषय है कि सनातन धर्म के पुरोधा पुरुष भारत रत्न महामना मदन मोहन मालवीय जी द्वारा सन् 1916 में लाहौर में संस्थापित एवं स्वतन्त्रता–प्राप्ति पश्चात् अम्बाला छावनी में पुनः स्थापित सनातन धर्म कॉलेज ने शैक्षणिक सत्र 2017–18 में राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद, (NAAC) बैंगलोर द्वारा शैक्षणिक, सांस्कृतिक, खेल जगत, एन.सी.सी., एन.एस.एस. आदि सभी क्षेत्रों में किए गए गहन निरीक्षण के आधार पर उत्तर भारत की अग्रणी इस महान शिक्षा संस्था को इसकी उत्कृष्ट सेवाओं के आधार पर 3.51 सी.जी.पी.ए. के साथ ए+ ग्रेड प्रदान किया है। हमारे कॉलेज ने हरियाणा प्रदेश में ए+ ग्रेड की गौरवपूर्ण उपलब्धि का नया कीर्तिमान स्थापित किया है। कॉलेज की यह गौरवपूर्ण उपलब्धि समस्त सनातन परिवार की है। मैं प्राचार्य के रूप में प्रबन्धक समिति के प्रधान आदरणीय श्री बृजकिशोर सोनी व अन्य पदाधिकारियों, कॉलेज के शिक्षक एवं शिक्षकेतर कर्मचारियों, छात्रवृन्द एवं उनके अभिभावकों, पूर्व विद्यार्थी परिषद, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के कुलपति एवं अन्य पदाधिकारियों, शिक्षा विभाग हरियाणा सरकार एवं विश्वविद्यालय अनुदान आयोग तथा कालेज के पितृ–निकाय **(Parental Body)** सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा, पंजाब (पंजीकृत) के आदरणीय प्रधान डॉ शिव कुमार शर्मा व अन्य समस्त सनातन परिवार को हार्दिक बधाई देता हूँ।

सनातन धर्म कॉलेज (लाहौर), अम्बाला छावनी उत्तर भारत की एक श्रेष्ठ शिक्षा संस्था है। 'लाहौर' शब्द इस महान शिक्षा संस्था के गौरवपूर्ण इतिहास को इंगित करता है। 101 वर्ष पूर्व 16 मई, 1916 को सनातन धर्म के आधार स्तम्भ महामना पं. मदन मोहन मालवीय जी ने सनातन धर्म व संस्कृति के संरक्षण एवं शिक्षा प्रसार के लिए काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के साथ–साथ लाहौर में इस कालेज की स्थापना की। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात यह शिक्षा संस्था त्यागमूर्ति गोस्वामी गणेशदत्त एवं अनेक समर्पित सनातन धर्मी अनुयायियों के सतत प्रयासों से अम्बाला में पुनः स्थापित हुई। स्वतंत्र भारत के प्रथम राष्ट्रपति महामहिम डॉ राजेन्द्र प्रसाद जी ने 3 अक्तूबर, 1951 को इस शिक्षा संस्था की नींव रखी। शताब्दी वर्ष मना चुकी इस महान शिक्षा संस्था का अपना गौरवमय स्वर्णिम इतिहास है।

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा इसे लगातार दूसरी बार **"College With Potential for Excellence"** की श्रेणी में रखा गया है। यह कॉलेज देश के उन 32 अग्रणी कॉलेजों में से है, जिन्हें विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा 'दीनदयाल उपाध्याय कौशल केन्द्र' के लिए चुना गया है। हरियाणा में ऐसे केवल दो ही कॉलेज हैं।

कॉलेज ने दो वर्ष पूर्व 2015 में सनातन धर्म मानव विकास शोध एवं प्रशिक्षण केन्द्र की स्थापना की जिसका लक्ष्य इनोवेशन रिसर्च एवं एप्लिकेशन है। अभी तक इस केन्द्र के अधीन 7 राष्ट्रीय संगोष्ठियाँ, 3 लघु पुस्तिकाएँ, 5 लघु गोष्ठियाँ, 4 व्याख्यान करवाए गए हैं। ऑन–लाईन सनातन धर्म विश्वकोष की भी योजना आरम्भ की गई है। इस केन्द्र को बैरागी सम्प्रदाय पर शोध कार्य करने हेतु दस लाख की अनुदान राशि भी प्राप्त हुई है। इस केन्द्र के द्वारा शीघ्र ही भारत रत्न महामना मदन मोहन मालवीय व त्यागमूर्ति गोस्वामी गणेशदत्त व्याख्यान माला आयोजित करवाने की योजना है।

यह शिक्षा संस्था उत्तर भारत की एक बहुसंकाय सहशैक्षणिक स्नातकोत्तर संस्था है। इसमें वर्तमान में 3000 से अधिक विद्यार्थी एवं 125 शिक्षक हैं। यहाँ 23 स्नातक 9 स्नातकोत्तर विषयों और 8 एड–ऑन कोर्सिज में शिक्षा दी जा रही है। हमारा पुस्तकालय ज्ञान की खान है जिसमें 60,000 के लगभग पुस्तकें हैं। संस्कृत की दुर्लभ पाण्डुलिपियों के साथ राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय जरनल प्रिंट एवं इलैक्ट्रॉनिक रूप में उपलब्ध हैं। कॉलेज की अपनी वैबसाइट है। कॉलेज का अपना सी.आई.एम.एस. सिस्टम है। रोजगार प्रकोष्ठ एवं कैरियर **Guidance Cell** विद्यार्थियों को रोजगार के अवसर प्रदान करता है। विद्यार्थियों की उपस्थिति, Assessment, Notes आदि उन्हें ऑन लाईन उपलब्ध हैं।

डॉ राजिन्द्र सिंह
प्राचार्य
सनातन धर्म कॉलेज (लाहौर)
अम्बाला छावनी

Pandit Mohan Lal
S.D. PUBLIC SCHOOL
Sector 32-C, Chandigarh

Glory Never Fades
Our Shinning Stars Excel Again
Remarkable Results
OUR SCHOOL TOPPERS 2017

Commerce

Anchit Aggarwal 98.4%
Acc 100, B.St. 99, Maths 98,
Phy.Ed 98, Eco 97

Hiya Bhandari 97.4%
Eco 100, Maths 100
Eng 97, Acc 95, B.St. 95

Non Medical

Uday Raghuvanshi 95.8%
Phy.Ed. 97, Maths 97,
Phy 95, Chem 95, Eng 95

Gourav Wadhwa 95%
Comp. Sci. 99, Maths 95,
Phy 95, Chem 95, Eng 91

Arts

Sarvpriye Pratap Singh 94.6%
History 98, Phy Ed. 98
Eco 95, Eng. 93, Pol. Sci. 89

School Toppers in Commerce, Science and Arts Stream will be given a cash prize of Rs. 7000/- each.

डॉ. नन्द किशोर शर्मा, प्रधान संपादक
10, अशोक विहार, महेश नगर
अम्बाला छावनी – 133001
मो. 9896589890, 8708534636

डॉ. देशबन्धु,
1117, प्रभु प्रेमपुरम, जगाधरी रोड़,
अम्बाला छावनी – 133001
मो. 9812053283

सदस्यता सहयोग प्रपत्र

मैं/हमारी संस्था ....

स्थायी पता ....

....

श्री सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा पंजाब (पंजी.) द्वारा प्रकाशित की जा रही "सनातन संवर्धिनी" नामक अर्द्धवार्षिक पत्रिका के लिए 100/– रू. (एक सौ रुपये केवल) की सहयोग राशि प्रतिवर्ष प्रदान करने का संकल्प लेता हूँ/लेती हूँ।

मैं/हमारी संस्था यह राशि नकद/चैक/ड्राफ्ट द्वारा श्री सनातन धर्म शिक्षा समिति (पंजी.) के नाम प्रेषित कर रहा हूँ/रही है।

हस्ताक्षर ....

नाम ....

पद ....

गौशाला हेतु दान संकल्प

मैं ....

स्थायी पता ....

....

श्री सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा पंजाब (पंजी.) द्वारा सप्तऋषि आश्रम हरिद्वार में संचालित गौशाला के लिए रुपये .... (शब्दों में) .... की दानराशि प्रतिवर्ष देने का संकल्प लेता हूँ/लेती हूँ। मैं यह राशि सप्तऋषि आश्रम हरिद्वार के नाम नकद/चैक/ड्राफ्ट द्वारा प्रदान कर रहा हूँ/रही हूँ।

हस्ताक्षर

श्री जगद्देव सिंह संस्कृत महाविद्यालय सप्तऋषि आश्रम, हरिद्वार में उत्तराखण्ड संस्कृत अकादमी के सौजन्य से आयोजित संस्कृत प्रतियोगिताओं एवं पौरोहित्य मासिक प्रशिक्षण शिविर की झलकियाँ

त्यागमूर्ति गोस्वामी गणेश दत्त जी की पुण्य तिथि दिनांक 10 जून, 2017 को सप्तऋषि आश्रम, हरिद्वार में आयोजित समारोह की झलकियाँ